Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687-E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 26.02.2016 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

यदि हम में तक़्वा और ख़ौफ़-ए-इलाही हो, यदि हम तक़्वा तथा अल्लाह का भय अपने भीतर पैदा करें तो फिर ही हमारी सफलताएँ हैं और फिर जब यह स्थिति होगी तो फ़रिश्ते हमारे लिए रास्ते बनाते चले जाएँगे।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- दुनया में बहुत सी बातें अनेक लोग, लग़्व एंव अकारण करते हैं। कुछ लोग मज़ाक़ में किसी को कोई अनर्थ बात कह देते हैं जिसके कारण झगड़े और समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। कई बार इस प्रकार की बातें मज्लिसों में की जाती हैं जो हानि कारक होती हैं। केवल बातें करने के लिए बात की जाती है और कई बार ऐसी कटु बातें भी हो जाती हैं जिसके कारण दूसरे को आघात भी लगता है अथवा ऐसी व्यर्थ बातें होती हैं जो किसी के लिए भी लाभप्रद नहीं होतीं, केवल समय का दुरुपयोग होता है। लग़्व के शाब्दिक अर्थ व्यर्थ एंव लाभ रहित चर्चा के हैं अथवा बिना सोचे समझे बोलने के हैं, अनर्थ एवं मूर्खता पूर्ण बातें करने के हैं। क़ुरआन-ए-करीम में ख़ुदा तआला ने मोमिनों को ऐसी बातों से रोका है जो लग़्व हैं।

मोमिन की यह निशानी बताई गई है कि जब वह कोई लग़्व देखता है तो उसको अनदेखा करके निकल जाता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि सामान्यतः महिलाएँ लग़्वियात की ओर आकर्षित होती हैं। हुज़ूर पूर नूर ने फ़रमाया- यद्यपि आजकल पुरुषों का भी यही हाल है। उदहरणतः अकारण ही दूसरों से पूछती रहती हैं कि यह कपड़ा कितने का लिया है? ये छोटी छोटी बातें हैं ये भी लग़्वियात ही हैं। यह आभूषण कहाँ से बनवाया है? ये बातें ऐसी हैं जो केवल सांसारिक बातें हैं जिनका कोई लाभ नहीं और कई बार साथ बैठी हुई अन्य महिलाओं पर इसके बुरे प्रभाव भी हो रहे होते हैं। जब तक उसका पूरा इतिहास न ज्ञात कर ले महिलाओं को चैन नहीं आता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुनाया करते थे कि एक महिला ने एक अंगूठी बनवाई परन्तु किसी ने उसकी ओर ध्यान न दिया, उसने तंग आकर अपने घर को आग लगा दी। लोगों ने पूछा कुछ बचा भी है? उसने कहा कि अंगूठी के अतिरिक्त उसके पास कुछ नहीं बचा। एक महिला ने पूछा कि कि बहिन तुम ने यह अंगूठी कब बनवाई थी यह तो बड़ी सुन्दर है, तो वह कहने लगी कि यदि यही बात तुम मुझसे पहले पूछ लेती तो मेरा घर क्यूँ जलता। यह प्रवृत्ति पुरुषों में भी है, अकारण ही सवाल जवाब करते हैं। अस्सलाम अलैकुम के बाद पूछने लगते हैं कि कहाँ से आए हो, कहाँ जाओगे, कितनी आय है, भला दूसरों को इन बातों में पड़ने की क्या आवश्यकता है। पश्चिमी क़ौमों में यह कभी नहीं होता कि वे एक दूसरे से पूछें कि तू कहाँ नौकरी करता है, शिक्षा कितनी है, वेतन कितना मिलता है, वे कुरेदने की चेष्टा नहीं करते।

इस प्रकार लग़्व केवल ऐसी चीज़ नहीं जो दूसरे को हानि पहुंचाने वाली हो बल्कि प्रत्येक लाभ रहित बात, लग़्व बात है। अतः मोमिन के लिए यह शर्त है कि उसकी बात चीत सदैव उद्देश्य पूर्ण हो तथा हर प्रकार की लग़्वियात से परहेज़ हो। अतः एक मोमिन को अपने व्यवहार से, अपनी दिन चर्या से, दूसरों के काम आने से, दूसरों पर उपकार करने से, अपना सम्मान पैदा करने का प्रयास करना चाहिए। केवल सीमित सम्मान न हो उसका कि उसके निकट सम्बंधी ही न केवल उस पर रोने वाले हों बल्कि जहाँ वह रहता है, जिस समाज का अंग है वहाँ उसका मान सम्मान स्थापित हो।

अल्लाह तआला से सम्बंध ही वास्तव में समस्या का समाधान निकालता है और यह सम्बंध तक़्वा से बढ़ता है तथा फिर

ये, अर्थात हम अहमदी जिनका यह दावा है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर हमने वास्तविक इस्लाम की शिक्षानुसार जीवन व्यतीत करना है। हमें तो यह जीवन व्यतीत करने के लिए प्रत्येक दशा में अल्लाह तआला की ओर ही देखना है, उसी से सम्बंध स्थापित करना है। हमारी सफलता कभी सांसारिक बातों के द्वारा नहीं हो सकती। अतः यदि हम में तक़्वा और ख़ौफ़-ए-इलाही हो, यदि हम तक़्वा तथा अल्लाह का भय अपने भीतर पैदा करें तो फिर ही हमारी सफलताएँ हैं और फिर जब यह स्थिति होगी तो फ़रिश्ते हमारे लिए रास्ते बनाते चले जाएँगे, इन्शाअल्लाह। अतः हम में से प्रत्येक को विचार करने की आवश्यकता है कि तक़वा पैदा करने का हम ने प्रयास करना है तथा ख़ुदा तआला से सम्बंध स्थापित करना है।

हुज़ूर पूर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक पीर की कथा बयान फ़रमाई जिसमें पीर ने एक तत्कालीन राजा के सामने अज्ञानता एंव मूर्खता के कारण एक ऐसी बात बयान कर दी जो यथार्थ से बहुत दूर थी। इस कहानी के बयान करने के पश्चात हुज़ूर पुर नूर ने नसीहत करते हुए हमें फ़रमाया कि प्रत्येक मुबल्लिग़ को चाहिए कि वह इतिहास, भूगोल, गणित, वैद्य ,वार्ता करने के शिष्टाचार, मज्लिस के शिष्टाचार इत्यादि की इतनी जानकारी अवश्य रखता हो जितनी आदरणीय लोगों की मज्लिसों में शामिल होने के लिए अनिवार्य है और कोई जटिल कार्य नहीं है, थोड़े परिश्रम से यह ज्ञान प्राप्त हो सकता है। इसके लिए प्रत्येक विद्या की आरम्भिक पुस्तकें पढ़ लेनी चाहिएँ। आजकल हमारे मुरब्बियों से वर्तमान स्थितियों के विषय में प्रश्न किए जाते हैं परन्तु कुछ मुरब्बी समाचा पत्र इत्यादि निरन्तर नहीं पढ़ते, ज्ञान नहीं होता अथवा समाचार नहीं सुनते, जानकारी नहीं होती या किसी विषय की गहराई में नहीं गए हुए होते इस लिए कई बार जो दुनयादार लोग हैं वे फिर अनुचित प्रभाव भी लेते हैं। इस लिए वर्तमान स्थितियों की जानकारी तथा जिस मज्लिस में जाएँ उसकी जानकारी अवश्य प्राप्त करके जाना चाहिए।

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला ने एक कथा बयान फ़रमाई कि एक व्यक्ति के दो बेटे थे। छोटा बेटा अपना सारा माल लेकर घर से चला गया। भोग विलास में जब सारा माल निमट गया और वह कठिनाई की अवस्था में अपने घर लौटा तो बाप ने उसे माफ़ कर दिया तथा उसका आदर भी किया। इस कथा को बयान करने के बाद हुज़ूर पुर नूर ने हमें उपदेश देते हुए फ़रमाया- अतः जो व्यक्ति कोई बुरा काम करता है तथा जब वह ग़लती के पश्चात अल्लाह तआला के समक्ष जाता है, उसके आगे झुकता है, अपने पाप को स्वीकार करता है तथा स्वीकार करते हुए प्रायश्चित करने का इज़हार करता है तो निस्संदेह अल्लाह तआला उसकी तौबा को क़बूल करता है तथा पहले से बढ़कर उस पर दया करता है। अतः एक मोमिन को भी अल्लाह तआला के गुणों को अपनाते हुए अपने भाईयों के साथ सुन्दर व्यवहार करना चाहिए। यदि वे सत्य मन से क्षमा मांगने आते हैं, ग़लतियों को स्वीकार करते हैं तो उनको अनदेखा कर देना चाहिए इसके साथ ही उनके लिए दुआ भी करनी चाहिए।

इंसान की भूमिका प्रत्येक अवस्था में दृढ़ होनी चाहिए यह नहीं कि कभी इधर हो गए कभी उधर हो गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि एक राजा ने एक बार बैंगन खाए तो उसे बड़ा मज़ा आया। उसका एक सेवक था उसने भी बैंगन की प्रशंसा आरम्भ कर दी। जितनी प्रशंसाएँ हो सकती थीं उन्हें गिन गिन कर बयान कर दीं। ये बातें सुनकर राजा को शौक पैदा हुआ तथा उसने कुछ दिनों तक बैंगन ही खाना शुरु कर दिए। क्यूँकि बैंगन गरम होते हैं इस कारण से उन्होंने गर्मी पैदा कर दी और राजा बीमार हो गया। राजा ने एक दिन कहा बैंगन बड़ी बुरी चीज़ है, इस पर उसी सेवक ने उसकी बुराईयाँ बयान करना शुरु कर दीं। किसी ने कहा कि यह क्या है, कल तुम प्रशंसा कर रहे थे आज उसकी बुराईयाँ कर रहे हो, कम से कम सच तो बोला करो तो कहने लगा कि मैं राजा का नौकर हूँ बैंगन का नहीं। आजकल हम मुसलमानों की दुनया में यही कुछ देखते हैं तथा हमें उनको देखकर फिर शिक्षा लेनी चाहिए। कैरैक्टर की दृष्टि से, भूमिका की दृष्टि से सबसे दृढ़ भूमिका तो मुसलमान की होनी चाहिए परन्तु दुर्भाग्यवश सबसे अधिक भूमिका की दृष्टि से गिरे हुए यही लोग हैं। सत्य पर स्थापित होने का तो प्रश्न ही नहीं

पैदा होता। सत्य पर स्थापित होने के लिए तो यह आवश्यक है कि उचित और अनुचित को सामने रखकर फिर अपना विचार रक्खा जाए और उचित विमर्श दिया जाए।

हुज़ूर पूर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जमाअत के लोगों को नसीहत करते हुए फ़रमाया- अल्लाह तआला से सम्बंध ही वास्तव में समस्याओं का समाधान निकालता है तथा यह सम्बंध तक़्वा से बढ़ता है और हम अहमदी जिनका यह दावा है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर हमने वास्तविक इस्लाम की शिक्षानुसार जीवन व्यतीत करना है। हमें तो यह जीवन व्यतीत करने के लिए प्रत्येक दशा में अल्लाह तआला की ओर ही देखना है, उसी से सम्बंध स्थापित करना है। हमारी सफलता कभी सांसारिक बातों के द्वारा नहीं हो सकती। अतः यदि हम में तक़्वा और ख़ौफ़-ए-इलाही हो, यदि हम तक़्वा तथा अल्लाह का भय अपने भीतर पैदा करें तो फिर ही हमारी सफलताएँ हैं और फिर जब यह स्थिति होगी तो फ़रिश्ते हमारे लिए रास्ते बनाते चले जाएँगे, इन्शाअल्लाह।

अतः हम में से प्रत्येक को सोचने की आवश्यकता है कि तक़्वा पैदा करने की हम ने कोशिश करनी है तथा ख़ुदा तआला से सम्बंध स्थापित करना है। जब एक दुनयादार का दुनयादार से सम्बंध उसे लाभान्वित कर सकता है तो ख़ुदा तआला से सम्बंध तो उस से हज़ारों लाखों गुना बढ़ कर लाभ देने वाला है। अतः बन्दे को अल्लाह तआला से दोस्ती करनी चाहिए, उससे प्रेम करना चाहिए। प्रगति का यही मार्ग है कि इंसान अपने आपको ख़ुदा के हाथ में दे दे और जिस ओर वह ले जाना चाहे उसी ओर वह चलता जाए।

एक सच्चे मोमिन का उदाहरण क्या है? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सच्चे मोमिन का उदाहरण सच्चे दोस्त से देते थे। आप सुनाया करते थे कि कोई अमीर आदमी था, उसके लड़के के कुछ आवारा दोस्त थे। बाप ने उसे समझाया कि ये लोग तेरे सच्चे दोस्त नहीं हैं केवल स्वार्थ के कारण तेरे पास आते हैं अन्यथा इनमें से कोई भी तुम्हारा शुभ चिंतक नहीं है परन्तु लड़के ने अपने बाप को जवाब दिया कि ऐसा लगता है कि आपको कोई सत्य मित्र नहीं मिला इस लिए आप सब लोगों के सम्बंध में ऐसा ही विचार रखते हैं, मेरे दोस्त ऐसे नहीं हैं, वे बड़े आज्ञाकारी हैं तथा मेरे लिए जान का बलिदान देने को तय्यार हैं। बाप ने फिर समझाया कि सच्चे दोस्त का मिलना बड़ा कठिन है। पूरी आयु में मुझे एक ही सच्च मित्र मिला है। परन्तु वह लड़का अपनी हठ पर अड़ा रहा। कुछ समय पश्चात उसने घर से ख़र्च के लिए कुछ पैसे मांगे तो बाप ने जवाब दिया कि मैं तुम्हारा ख़र्च सहन नहीं कर सकता, तुम अपने दोस्तों से मांगो, मेरे पास इस समय कुछ नहीं है। वास्तव में उसका बाप उसके लिए अवसर पैदा करना चाहता था ताकि वह अपने दोस्तों की परीक्षा ले। जब बाप ने घर से जवाब दे दिया और सभी मित्रों को जानकारी मिल गई तो उन्होंने उसके पास आना जाना बन्द कर दिया तथा मेल जोल छोड़ दिया। अन्त में व्याकुल होकर स्वयं ही उनसे मिलने गया। जिस दोस्त के द्वार पर दसतक देता वह भीतर से ही कहला भेजता कि वह घर में नहीं है, बीमार है नहीं मिल सकता। पूरे दिन उसने चक्कर लगाया परन्तु कोई दोस्त मिलने के लिए बाहर न आया। अन्त में शाम को घर लौटा। बाप ने पूछा कि बताओ दोस्तों ने क्या सहायता की। कहने लगा कि सारे ही हराम ख़ोर हैं किसी ने कोई बहाना बना लिया है किसी ने कोई। बाप ने कहा कि मैंने तुम्हें नहीं कहा था कि ये लोग शुभ चिंतक नहीं हैं अच्छा हुआ तुम्हें भी अनुभव हो गया। अब आओ मैं तुम्हें अपने दोस्त से मिलाऊँ। ये बाप बेटा उसके मकान पर पहुंचे और दरवाज़े पर दसतक दी, भीतर से आवाज़ आई कि मैं आता हूँ। बड़ी देर हो गई द्वार खोलने के लिए कोई न आया। लड़के के दिल में विभिन्न विचार उत्पन्न होने लगे। उसने बाप से कहा अब्बा जी ऐसा लगता है कि आपका दोस्त भी मेरे दोस्तों जैसा ही है। बाप ने कहा कि देख, कुछ देर प्रतीक्षा कर, अन्ततः कुछ समय व्यतीत हो गया, दोस्त दरवाज़ा खोलकर बाहर आया तो गले में तलवार लटकी हुई थी और एक हाथ में एक थैली उठाई हुई थी दूसरे हाथ से बीवी का

बाजू पकड़ा हुआ था। द्वार खोलते ही उसने कहा, क्षमा कीजिए आपको असुविधा हुई, मैं तुरन्त न आ सका। मेरे जल्दी न आने का कारण यह हुआ कि आपने जब द्वार पर दसतक दी तो मैं समझ गया कि कोई विशेष बात है कि आप स्वयं आए हैं अन्यथा आप किसी नौकर को भी भेज सकते थे। मैंने द्वार खोलना चाहा तो सहसा मुझे विचार आया कि हो सकता है कोई कठिनाई आई हो, ये तीन चीज़ें मेरे पास थीं, एक तलवार, एक थैली जिसमें मेरा एक साल का ख़र्च है तथा यह मेरी पत्नि है जो सेवा के लिए उपस्थित है कि सम्भव है आपके घर में कोई असुविधा हो और यह देर जो हुई है यह इस कारण से हुई कि थैली ज़मीन में दबी हुई थी उसको निकालने में देर लग गई और तलवार इस लिए साथ ले ली कि यदि जान की आवश्यकता हो तो मैं जान पेश कर सकूँ। उस धनी व्यक्ति ने कहा कि मेरे दोस्त, मुझे इस समय किसी सहायता की आवश्यकता नहीं है तथा कोई कठिनाई मुझे नहीं आई बल्कि मैं केवल अपने बेटे को शिक्षा देने के लिए आया हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि यह सच्ची दोस्ती है और इससे बढ़कर सत्य मित्रता इंसान को अल्लाह तआला से स्थापित करनी चाहिए कि वह अपनी जान, माल तथा अपनी प्रत्येक वस्तु की क़ुरबानी के लिए तय्यार रहे। जिस प्रकार दोस्त कभी मानते हैं और कभी मनवाते हैं इसी प्रकार इंसान का कर्त्तव्य है कि वह सच्चे हृदय के साथ तथा शरह एकाग्र मन के साथ अल्लाह तआला की राह में क़ुरबानियाँ करता चला जाए। अल्लाह तआला हमारी कितनी बातें मानता है, रात दिन हम उसकी दी हुई सुविधाओं से लाभान्वित होते हैं उसने जो चीज़ें हमारी सुविधा तथा आराम के लिए बनाई हैं हम उनको प्रयोग में लाते हैं। तो किस अधिकार के अंतर्गत हम इतनी चीज़ों से लाभ प्राप्त करते हैं? ख़ुदा तआला हमारी कितनी अभिलाषाएँ पूरी करता है और यदि एक आध बार हमारी इच्छा के विरुद्ध हो जाए तो किस प्रकार लोग अल्लाह तआला से विमुख हो जाते हैं। वास्तविक सम्बंध यह है कि दुविधा हो कि सुविधा, दोनों अवस्थाओं में सम्बंध बना रहे तथा उसमें कोई अन्तर न आए।

अतः वे लोग जो नमाज़ों के हक़ अदा नहीं करते उन्हें अपना निरीक्षण करना चाहिए। वे लोग जो दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने की प्रतिज्ञा को पूरा नहीं करते उन्हें अपने निरीक्षण करने चाहिएँ। वे लोग जो यहाँ आए तो अहमदियत के कारण हैं परन्तु यहाँ आकर भूल गए हैं कि अहमदियत के कारण ही उन्हें यहाँ की नागरिकता मिली है तथा उनको अधिक से अधिक जमाअत की सेवा के लिए आगे आना चाहिए।

हुज़ूर पूर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने ज्ञान वर्धक जुम्अः के ख़ुत्बः के अन्त में हमें नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं- अतः आज जो अल्लाह तआला के प्रेम में लीन व्यक्ति तथा अल्लाह तआला के पैग़ाम को दुनया में फैलाने का एहद करके खड़े होने वाले व्यक्ति को मानने का दावा करते हैं, आज हम जो अल्लाह तआला के प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे सेवक की बैअत में आने का दावा करते हैं यदि आज हम यह समझते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने से अल्लाह तआला का वादा पूरा हुआ है और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोई पूरी हुई है और इस्लाम अपने पुनर्जीवन के दौर में दाख़िल हुआ है अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा यह विश्व के कोने कोने में पहुंचेगा। यदि हम ने आप से यह बैअत की प्रतिज्ञा इस लिए की है कि हम आप अलैहिस्सलाम के काम में आपके सहायक बनेंगे तो फिर हमें भी अपनी समस्त प्रतिभाओं के साथ, जो भी हम में हैं, कम हैं कि अधिक, आपकी आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए आगे आना चाहिए। अपनी मुहब्बत को प्रकट करना चाहिए ख़ुदा तआला से भी तथा उसके रसूल से भी और उसके मसीह से भी। अपनी हालतों में पवित्र परिवर्तन पैदा करने चाहिएँ, अपने आज्ञापालन के स्तर ऊँचे करने चाहिएँ। इसी प्रकार हर एक क़ुरबानी के लिए तय्यार रहना चाहिए जिस प्रकार वह निर्धन दोस्त अपने धनवान दोस्त के लिए तय्यार हुआ था। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।